



















गोभीवर्गीय सब्जियों में फूल गोभी, बंद गोभी (पत्ता गोभी), गांठ गोभी प्रमुख हैं, पिछले कुछ वर्षों से ब्रोकली भी लोगों द्वारा पसंद की जा रही है।



## फूल गोभी

**फू.** लगोभी एक लोकप्रिय सब्जी है। भारत में इसकी कृषि के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल लगभग 3000 हेक्टर है, जिससे लगभग 6,85,000 टन उत्पादन होता है। जर्तमान में इसे सभी रसायनों पर उत्पादा जाता है। फूल गोभी में प्रोटीन, कैल्शियम, फ्लास्फोरस, विटामिन 'ए', 'सी' तथा निकोटीनिक एसिड जैसे पोषक तत्व होते हैं। गोभी का अचार आदि भी तैयार किया जाता है। फसल की अवधि 60 से 120 दिन की होती है। प्रति हेक्टेकर 100 से 250 किलोग्राम चुनून प्राप्त हो जाते हैं।

## किस्में

1. अंगोती = पूसा बेबना, पूसा अंगोती किसेटिक, पूसा कार्टिक मंकर, पूसा दीपाली
2. मध्यम अंगोती = पूसा शरद, पूसा हाइड्रिड-2
3. मध्यम अंगोती = पूसा सिंथेटिक, पूसा गोभी, पूसा शूब्दार्थकि
4. पहेली = पूसा खोबाल के-1, पूसा खोबाल के-25

## बीज की मात्रा बुवाई का समयपरिपक्वता समय

500-600 ग्रा./हे. मध्य मई से जून सितम्बर से अक्टूबर  
400 ग्रा./हे. जुलाई अंत से अगस्त प्रारम्भ नवम्बर से दिसम्बर  
350 ग्रा./हे. अगस्त अंत से सितम्बर प्रारम्भ दिसम्बर से जनवरी  
300 ग्रा./हे. सितम्बर-अक्टूबर करवरी-मार्च

बीज उपचार- कैप्टन या बैकिस्टीन 2 ग्रा. प्रति किलो बीज के हिसाब से

## उर्वरण व साद

गोबर का खाद नवजन कास्फोरस पोटाश 50-60 टन/हेक्टेकर 120 किं.ग्रा./हे. 100 किं.ग्रा./हे. 60 किं.ग्रा./हे.



## प्लास्टिक मल्टिंग (पलवार) कथा है:

**प**की भूमि को प्लास्टिक फिल्म से व्यवस्थित रूप से ढकने की क्रिया है। जर्तमान में प्रयोग में लाए जाने वाले प्लास्टिक फिल्म विभिन्न रंगों एवं मोर्टाई में उपलब्ध है। तुलानात्मक रूप से प्लास्टिक पलवार अच्युतवरी से पूरी तरह से पानी के लिए अधिक है, इसलिए प्रबल्क्ष रूप से मिट्टी से नसी के वाष्पीकरण, पानी का कम उपयोग और मिट्टी कटाव को रोकती है। इस प्रकार पलवार जल संरक्षण में एक मकारात्मक भूमिका निभाती है। प्लास्टिक मल्टिंग में वाली जाती है।

## सब्जी वाली फसलों में प्लास्टिक पलवार विधान

सब्जी वाली फसलों में मुख्यतः 25-30 मार्कोन वाली प्लास्टिक मल्च फिल्म का प्रयोग किया जाता है। सबसे पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार करके उंची ऊर्ध्व बचारियों बनाई जाती है। फिर इन बचारियों के ऊपर सिंचाई हेतु इनलाइन ट्रिप सिंचाई हैंटरल पाइप को लगाया जाता है। फिर उचित रोप के प्लास्टिक मल्च फिल्म को बचारी के ऊपर लगाया जाता है और दोनों किनारों पर दबा दिया जाता है। लगाई जाने वाली लाईन से लाईन फसल के पौधे से पौधे की दूरी के अनुसार करना चाहिये। लाईन एवं चौड़ाई को बराबर रखते हुए प्लास्टिक मल्टिंग (पलवार) को काटना चाहिये। इन फसलों में मल्च फिल्म को मुख्यतः हाथों द्वारा ही पौधों के बारे तरफ लगाया जाता है। इसमें सामान्यतः फसलों के वितान शेत्र के विस्तार के कम से कम 50 प्रतिशत जड़ शेत्र में लगाने की अनुमति की जाती है। सबसे पहले पौधे के चारों तरफ की जगह को खरपतवार तथा घासकूस इकट्ठा करके साफ किया जाता है। फिर एक ऊंची नाली पौधे के चारों तरफ बनाया जाता है जिससे कि मल्च फिल्म को लगाकर आसानी से इवाया जा सके। मल्च फिल्म के एक सिरे से चौड़ाई वाले भाग में बीच से आधी मल्च फिल्म को काटकर पेंड के लिए पास लगाते हैं तथा कटी हुई फिल्म को 10-

# गोभीवर्गीय सब्जियाँ



## बंदगोभी

खेत की अंतिम तैयारी के समय आधी मात्रा में नवजन तथा आधी भूमि में मिला दें। शेष नवजन को बराबर दो हिस्सों में बांट कर एक हिस्सा रोपाई के एक भाग हीने पश्चात निराई-गुड़ाई के साथ खेत में मिला दें और एक चौथाई भूमि शीर्ष बनने की स्थिति में मिट्टी छाड़ते समय भूमि में मिला दें।

## बंदगोभी

पत्ता गोभी, उपयोगी पत्तेदार भूमि है। भारत के सभी क्षेत्रों में उगाई जाती है। भारत में इसका क्षेत्रफल 83,000 हेक्टर है, जिसमें 500,000 टन उत्पादन होता है। फूलगोभी की तरह पत्ता गोभी पत्तियों का समूह है, जिसे सज्जों के रूप में उपयोग किया जाता है। पत्ता गोभी में विशेष मन्मोहक सुगन्ध 'सिनेपिन' लूकोसाइड के कारण होती है। पोषिक तत्वों से भरपूर होती है। इसमें प्रचुर नाली में विटामिन 'ए' और 'सी' तथा कैल्शियम, फ्लास्फोरस खनिज होते हैं।

रोपाई से पहले स्टाम्प 3.3 लिटर या बैसलीन 2.5 लिटर प्रति हेक्टेकर की दर से छिड़काव कर हाल्के सिंचाई करें।

**रोपे की अवस्था** पंक्ति व पौधों की दूरी अंगोती फसल 5-6 साताह बाली पौध 45 × 30 से.मी.

मध्य व पहेली फसल 3-4 साताह बाली पौध 60 × 45 से.मी.

**मिंचाई** : अंगोती फसल में रोपाई के तुरन्त बाद तथा सालाहिक अंतराल पर वा मध्यम व पहेली फसल में 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

**कटाई व उपज** : गोभी फूलों को उनकी प्रजाति के अनुसार आकार ग्रहक करते ही तुरन्त काट लेना चाहिए। कटाई उपरांत बाहर आले बढ़े पत्तों को ही हटाईं। इससे फूलों की गुणवत्ता ज्यादा रहेगी। विभिन्न वर्गों की प्रजातियों की पैदावार इस प्रकार होती है-

**अंगोती** मध्य अंगोती (अगस्त से सितम्बर चुनाई), गोरेंडन एकड़, पूसा मुका, पूसा इमहैंड, संकर किसन, के.जी.एम.आर. (अक्टूबर से नवम्बर चुनाई)

**बीज की मात्रा** : 400-600 ग्रा. प्रति



## हेक्टेकर

## खदाव उर्वरक

गोबर की खाद	नवजन
फासफोरस	पोटाश
30-40 टन प्रति हे.	120 किं.ग्रा./हे. 6 0 किं.ग्रा./हे.

## सरय क्रियाएँ

खेत की अच्छी तरह जुलाई कर्ते तथा रोपाई से पहले खोल तैयार करते समय आधी नवजन व अन्य खादें भूमि में मिला दें तथा जो नवजन की आधी मात्रा रोपाई के एक महीना पश्चात निराई-गुड़ाई के साथ खेत में मिला दें और एक चौथाई भूमि शीर्ष बनने की स्थिति में मिट्टी छाड़ते समय भूमि में मिला दें।

## रोपाई

बुवाई के एक महीने पश्चात पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है।

## पंक्ति व पौधे की दूरी

अंगोती किल्में	45 × 30 से.मी.
पहेली किल्में	60 × 45 से.मी.

खरपतवारनाली बैसलीन या स्टाम्प का छिड़काव रोपाई से एक-दो दिन पहले करें और इसके पश्चात तुरन्त हाल्की सिंचाई करें। फसल बढ़ावार के समय पूर्ण नमों बनाएं रखें तथा आवश्यकतानुसार समय-समय पर सिंचाई करें।

## कटाई व उपज

दोस शीर्ष वाले पौधों को जमीन की सतह से काट दें। खुले पत्तों व तने की शीर्ष से अलग कर दें। अंगोती प्रजातियों की पैदावार 25 से 30 टन तथा पहेली प्रजातियों की पैदावार 40 से 50 टन तक हो जाती है।

विधि-माला पैदावार का उपयोग करें।

## शुभम संदेश

रांची, मंगलवार 14 अक्टूबर 2025

09

फूलगोभी एवं बंदगोभी के प्रमुख रोग एवं नियन्त्रण



## आर्द्ध पतन (डैम्पिंग ऑफ)

भूमि की सतह के पास पौधे के तने पर भूरे रंग के पानी वाले तथा नरम अध्ये बनते हैं। रोपी भाग काफी कमज़ोर पड़ कर लिकड़ जाता है। फलस्वरूप पौध उपरी स्थान से टूटकर या मुट्ठकर नीचे पिर जाती है। पत्तियों का पीला पड़ना और मुरझाकर सूखा जाना इस रोग को मुख्य पहचान है। कैटन या ब्लाइटाक्स 2.5 ग्राम/लिटर का आवश्यकतानुसार सुरक्षी में छिड़काव करें।

## काला बीगलन

इस रोग में पहले पत्तियों पीली पड़ जाती है, फिर शिखावे काली होनी लगती है।





